सं० ग्रो॰ वि॰/एफ॰ दी॰/73-86/21345.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राष है कि मैं॰ कलच ग्राटो लि॰, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्रीकृष्ण नन्दन, पुत्र श्री, परशादी गाह, ब्लाक बी/87, संजय कालोनी, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इसलिए, श्रम, श्रीद्योगिक विवाद श्रविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं शिक्षियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिमूचना सं० 5415—3-श्रम—68/15254, दिनांक 20 जूब, 1978 के साथ पढ़ते हुये ग्रिश्चित्वना सं० 11496 जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीविनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को बिबाद करता गा उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबन्धित मामला है:—

क्या भी कृष्ण नन्दन, पुत्र भी परशादी ज्ञाह की सेवा समाप्त की गई हैया उसने स्वयं त्यागपत देकर नौकरी छोड़ी है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं व श्रो वि । (पानी | 44-86 | 21351 - पूर्ति हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं इरियाणा वेयर हार्कीसंग कारपोरेशन, एस.सी.श्रो. 8, सैक्टर 17, चण्डीगढ़, (ii) जिला प्रबन्धक, हरियाणा वेयर हार्कीसंग कारपोरेशन, पानीपत की श्रीमका श्रीमती राजरानी भकान नं 11/513, रिशी नगर, सोनीपत, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामल में कोई भीखोगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हस्याणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणर्य हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रम, श्रीधोगिक विशाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप-घारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की नई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चता सं03(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्रीमती राज्यानी की सेवाग्रों का समापने न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राष्ट्रत की हुकदार है ?

## दिनांक 25 जून, 1986

सं गो वि /एफ़ की /गुड़ / 29-86 / 21498. - मूर्कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैनेजर हरियाणा रोड़नेज, रिवाड़ी के श्रामिक भी सतबीर सिंह, पुत श्री हेत राम, गांव राजपुरा, पो श्राफिस पलवल सहसील, पलवल, जिला फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणां के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वां∎नीय समझते हें ;

इसलिए, ग्रव, भौद्योगिक विवाद भिद्यतियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिनतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रविस्ताना सं० 5415-3-अम-68/15254; विनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त भिद्यतियम की धारा 7 के ध्रधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में दैने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

' क्या श्री सतवीर सिंह, पुत्र श्री हैतराम की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस <sup>6</sup> राष्ट्रत का हकदार है ?

> जे० पी० रतन, उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।